23-03-2022

भाषा = भाव व विचारों की अभिव्यक्ति को भाषा कहते है।
भाषा के दो प्रकार होते है :-
1) मौखिक 2) लिखित

⇒ भाषा कि विशेषताएँ :-
- नित्य परिवर्तनशील है।
- भाषा कठिनता से सरलता की ओर जाती है।
- भाषा अनुकरण से सीखी जाती है।

⇒ भाषा के काल :-
- प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल (1500 ई.सा. पूर्व से 500 ई.सा.पूर्व)
- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल (500 ई.सा. पूर्व से 1000 ईस्वी)
- आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल (1000 ईस्वी से आज तक)

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल के प्रकार :-
1) वैदिक संस्कृत 2) लौकिक संस्कृत

24-03-2022

प्रश्न 1) मानक भाषा किसे कहते है? मानक भाषा के स्वरूप और लक्षण को समझाइए।

उत्तर मानक का अर्थ होता है एक निश्चित पैमाने के अनुसार गठित। मानक भाषा का अर्थ है एक ऐसी भाषा जो एक निश्चित पैमाने के अनुसार गठित हो अथवा बोली व लिखी जाती हो।

मानक भाषा का व्याकरण के अनुसार ही लिखी व बोली जाती है। व्याकरण उसका पैमाना है। जब हम किसी अपरिचीत व्यक्ति से बात करते है

तो उससे मानक भाषा मे ही बातचीत करते है पत्र व्यवहार मे भी मानक भाषा ही लिखते है। समाचार पत्रो कि भाषा मानक होती है। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर समाचार मानक भाषा मे प्रसारित किए जाते है। हमारे प्रशासन के सारे कामकाज मानक भाषा मे होते है।

मानक भाषा हमारी बात को दूसरो तक उसी रूप मे पहुचाती है जैसा हमारा आशय होता है

मानक भाषा कि विशेषताए:-

मानक भाषा सर्वमान्य भाषा होती है। वह व्याकरण के अनुसार होती है और उसमे निश्चित अर्थ सम्प्रेशित करने की क्षमता होती है।

मानक बिन्दु के स्वरूप:-

हिन्दी कि आधुनिक मानक शैली का विकास खडी बोली से हुआ है। हिन्दी मानक भाषा है जबकी खडी बोली दिल्ली, रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, सहारनपुर आदी मे बोली जाती है।

खडी बोली क्षेत्र मे रहने वाले प्राय: प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति खडी बोली प्रयुक्त करता है लेकिन औपचारिक अवसरो पर वे व्यक्ति मानक हिन्दी का प्रयोग करते है। राष्ट्रय कवि मैथलीशरण गुप्त चिरगाँव के थे वे घर मे बुन्देलखंडी बोलते थे लेकिन साहित्य लेखन मे मानक हिन्दी का व्यवहार किया है। मानक भाषा अपनी भाषा का एक विशिष्ट रूप है। मानक भाषा कि कसौटी पर निम्नलिखित वाक्यो को कसा जा सकता है।

1. मैने भोजन कर लिया है।
2. मैने खाना खा लिया है।
3. मैने खाना खा लिया हूँ।
4. हम खाना खा लिए है।

⇒ मानक भाषा के लक्षण:-

1. वह भाषा व्याकरण के अनुसार होती है।
2. वह सर्वमान्य होती है।
3. वह हमारे सुस्कृतिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक, संविधानिक क्षेत्रो का कार्य सम्पादित करने मे सक्षम होती है।
4. वह सुनिश्चित, और सुनिर्धारित होती है।
5. वह नवीन आवश्यकता के अनुरूप निरंतर विकसित होती है।
6. नए शब्दो के ग्रहण और निर्माण मे समर्थ होती है। सभी प्रसिद्ध व्यक्ति औपचारिक अवसरो पर मानक भाषाए का प्रयोग करते है।
7. अध्ययन, अध्यापन, अनुभव, अनुशासन आदि मे मानक भाषा प्रयुक्त कि जाती है।

प्रश्न) भाषा किसे कहते है? हिन्दी भाषा के विकास का परिचय दिजीए।

उत्तर भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावो या विचारो का आदान-प्रदान करता है। जिसके द्वारा हम भावो को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरो को समझा सके और दूसरो के भावो को समझ सके उसे भाषा कहते है। सरल शब्द मे: सामान्यत: भाषा मनुष्य की सार्थक

व्यक्त वाणी को कहते है।
मध्यकाल मे हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट हो गया तथा उसकी प्रमुख बोलियां विकसित हो गई। इस काल मे भाषा के तीन ~~मुख्य~~ रूप निखरकर सामने आए ब्रजभाषा, अवधी व खड़ी बोली। ब्रजभाषा और अवधी का अत्यधिक साहित्यिक विकास हुआ तथा तत्कालीन ब्रजभाषा साहित्य को कुछ देशी राज्यो का संरक्षण भी प्राप्त हुआ।

प्रश्न3) अशुद्धि किसे कहते है ? अशुद्धि के प्रकारो को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर जब व्याकरण के नियमो के विपरीत भाषा का प्रयोग किया जाता है वहाँ अशुद्धि होती है उसे दूर करने कि प्रक्रिया अशुद्धि शंसोधन कहलाती है भाषा मे मुख्य रूप से चार प्रकार कि अशुद्धिया होती है।

1) उच्चारणगत अशुद्धि 2) वर्तनिगत अशुद्धि (भाष)
3) शब्द एवं शब्दार्थगत अशुद्धि 4) वाक्यगत अशुद्धि

1. उच्चारणगत अशुद्धि के उदाहरण
(i) कवी - कपि (ii) आयू - आयु
(iii) वाल्मिकि - वालमीकि (iv) जन्ता - जनता
(v) अस्नान - स्नान (vi) धरम - धर्म
(vii) करम - कर्म

2. शब्द एवं शब्दार्थगत अशुद्धि के उदाहरण
(i) बद्सूरत - खूबसूरत
(ii) दु: सूरत - बदसूरत
(iii) विशय का प्रतिपादन
(iv) कार्य का सम्पादन
(v) दोष मढना (vi) कील जड़ना।

3. वाक्यगत अशुद्धि के उदाहरण
(i) मैने नेताजी को एक गेन्दे कि माला से स्वागत किय
सही मैने नेताजी को गेन्दे कि एक माला से स्वागत किय
(ii) हम खाना खाती है। (खाती → खाते)
(iii) हमे गाडी का इन्तजार थी। (थी → था)
(iv) ईश्वर के अनेको रूप है। (अनेको - अनेक)
(v) हिमालय कि सौंदर्यता देखने लायक है।
हिमालय का सौंदर्य देखने लायक है।
(vi) कोयल का कंठ सबसे मधुरतम है।
कोयल का कंठ मधुरतम है।
(vii) कक्षा मे केवल मात्र लडके थे।
कक्षा मे केवल/मात्र लडके थे।
(viii) बाहर भीषण बूंदा बांदी हो रही है।
बाहर हल्कि बूंदा बांदी हो रही है।
(ix) दही स्वास्थ के लिए अच्छी होती है।
" " " " अच्छा होता है।
(x) राम के अन्दर कई दोष है।
राम मे कई दोष है।
(xi) अचानक उसके सीने पर दर्द हुआ।
अचानक उसके सीने मे दर्द हुआ।
(xii) पाँच मिनट के अन्दर आ रहा हूँ।
पाँच मिनट मे आ रहा हूँ।

Unit - II

परिभाषिक शब्दावली

परिभाषिक शब्दावली, परिभाषाकोश का प्रती शब्द है। ज्ञान कि किसी विशेष विद्या (क्षेत्र) मे प्रयोग किए जाने वाले शब्दो कि उनकी परिभाषा सहित सूची परिभाषिक शब्द कहलाते है।

उदाहरण के लिए - गणित के अध्ययन मे आने वाले शब्दो और उनकी परिभाषा को पारिभाषिक शब्दावली कहते है। डॉ रघुवीर सिंह के अनुसार पारिभाषिक शब्द वह होते है जिसका प्रयोग किसी विशेष अर्थ मे संकेत रूप से होता है। उन्हि के अनुसार पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सिमाँए बांध दि गई हो। जिनकी सीमा नही बांधी जाती वह साधारण ~~बोली~~ होते है।

डा भोलानाथ तिवारी के अनुसार पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दो को कहते है जो भौतिकि, रसायन, प्राणी विज्ञान, दर्शन, गणित, विधी, वाणीज्य, अर्थ शास्त्र, मनो-विज्ञान, भुगोल आदि ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रो के विशिष्ट शब्द होते है जिनकी अर्थ सीमा निश्चित और परिभाषित होती है क्षेत्र विशेष मे इन शब्दो का विशिष्ट अर्थ होता है।

प्रश्न1) परिभाषिक शब्दावली किसे कहते है? इसके स्वरूप और प्रकार को स्पष्ट किजीए।

प्रश्न2) परिभाषिक शब्द कि विशेषताँए बताइए।

प्रश्न3) पारिभाषिक शब्दावली निर्माण कि प्रक्रिया अथवा सिद्धांत लिखिए।

प्रश्न-4) प्रशासन से सम्बंधित बारह पारिभाषिक शब्द लिखिए

04/04/2021

⇒ परिभाषिक शब्द के प्रकार:-

यह दो प्रकार के होते है :- पूर्ण पारिभाषिक और अपूर्ण पारिभाषिक

⇒ पारिभाषिक शब्दो का स्वरूप:-

जब किसी शब्द का प्रयोग एक सुनिश्चित अर्थ मे किया जाता है उनका कोई अन्य अर्थ निकालने कि कोशिश नही होती उनके अर्थ को पूरी तरह सीमित कर दिया जाता है तब वह पारिभाषिक शब्द कहलाता है इस प्रकार कि विशेष शब्दावली ही पारिभाषिक शब्दावली कहलाती है।

पारिभाषिक शब्द का अर्थ निश्चित होना चाहिए। एक अर्थ को व्यक्त करने वाला एक हि शब्द होना चाहिए। प्रथम गुण से अभिप्राय है कि शब्द विशेष एक हि अर्थ बताने वाला हो। दूसरे गुण से आशय है कि एक शब्द के यदि दो या दो से अधिक अर्थ हो तो भी उनमे सूक्ष्म अंतर होता है इसलिए ~~परिस्थि~~ परिस्थिती के अनुसार शब्द का चयन करना चाहिए। पारिभाषिक शब्दो का रूप यथा सम्भव छोटा होना चाहिए जिससे प्रयोग करते समय असुविधा ना हो। पारिभाषिक शब्द के नियमो मे प्रत्यय उपसर्ग या अन्य उपयुक्त शब्द जोडकर परिवर्तन करने कि छूट होनी चाहिए।

⇒ पारिभाषिक शब्दावली कि विशेषताँए -

1) पारिभाषिक शब्द परिभाषित होता। इसलिए संकल्पना

के आधार पर इन शब्दो कि व्याख्या कि जा सकती है जैसे घनत्व, वोल्ट

२. पारिभाषिक शब्द निर्मित किए जाते है इसलिए किसी भाव या विचार को व्यक्त करने मे संदेह कि गुंजाईश नही होना चाहिए जैसे अंतरिक्ष, दूरबीन

3. पारिभाषिक शब्द सामान्य व्यवहार मे प्रयुक्त नही होते है जैसे आवर्तसारिणी, अकार्बनिक रसायन

4. यह शब्द विशिष्ठ अर्थ मे प्रयुक्त होते है। अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत, सैरी कल्चर

5. विषय संदर्भ कि स्थिती के अनुसार इनका निर्माण कृत्रिम होता है।

⇒ पारिभाषिक शब्दो के अन्य गुण।

1. पारिभाषिक शब्दो के अर्थ मे अस्पष्टता नही होनी चाहिए

२. एक संकल्पना के लिए एक हि पारिभाषिक शब्द होना चाहिए

3. पारिभाषिक शब्द छोटा और सरल होना चाहिए जिससे सरलतापूर्वक याद हो सकेगा।

4. पारिभाषिक शब्दो को बोलने का ढंग व्याकरण के नियम उस भाषा के अनुसार होना चाहिए। जिस भाषा मे उसका प्रयोग किया जा रहा है।

ऽ. इन शब्दो का चयन करते समय यह ध्यान रहे कि उनका जन जीवन से संबंध हो।

⇒ पारिभाषिक शब्द कि अशुद्धियाँ:-

1. प्रयुक्ति संबंधि दोष
२. सह प्रयोग संबंधि दोष
3. निर्माण संबंधि दोष
4. अर्थ संबंधि दोष
5. प्रयोग संबंधि दोष

⇒ पारिभाषिक शब्द का सबसे बडा दोष दुरूहता (कठनाई) है यदि अतिशुद्धता पर बल दिया जाता है तो वह शब्द अलग - थलग हो जाता है इस कारण से अनेक शब्द हास्यास्पद हो गए है।

प्रश्न। पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत बताइए।

पारिभाषिक शब्दो का निर्माण आम तौर पर उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर किया जाता है। उपसर्ग अथवा प्रत्यय मूल शब्द से जुडकर उसका अर्थ बदल देते है जैसे

अनु + बंध = अनुबंध , सम + लग्न = संलग्न

प्र + मान = प्रमाण

जो प्रत्यय क्रिया की मूल धातु के साथ लगा कर संज्ञा और विशेषण शब्दो का निर्माण करते है वे कृत प्रत्यय कहलाते है।

जो प्रत्यय संज्ञा सर्वनाम शब्दो के साथ मिलकर नया शब्द बनाता है उसे तद्धित प्रत्यय कहते है।

⇒ परिभाषा का अर्थ:- 05/04/2022

किसी वस्तु अवधारणा या विचार का वास्तविक ज्ञान कराने वाला नपा तुला कथन परिभाषा कहलाता है। यह कथन अव्याप्ति, असंगति, अतिव्याप्ति दोष

से रहित संक्षिप्त दोष से रहित और सुस्पष्ट होना चाहिए।

प्रश्न 1 :- आगे से

① क्षेत्र + ई = क्षेत्रीय
② माप + न = मापन
} - यह दो उदाहरण प्रत्यय के है

⇒ 50 शब्द वाणिज्यिक, 50 शब्द वैज्ञानिक, 50 शब्द प्रशासनिय यह याद होने चाहिए

③ पद + उन्नती = पदोन्नती
④ निदेश + आलय = निदेशालय

⇒ प्रशासनिक शब्दावली

1. Affiliated college = संबद्ध महाविद्यालय
2. Cader = समवर्ग
3. Cencus officer = जनगणना अधिकारि
4. Chancellor = कुलाधिपती
5. Vice chancellor = कुलपति
6. Deputation = प्रतिनियुक्ति
7. Direltor = निदेशक
8. Eligibility = पात्रता
9. Gazetted officer = राजपत्रित अधिकारी
10. Inspector = निरिक्षक
11. Momerendum = ज्ञापन
12. Notification = अधिसूचना
13. Registrar = कुलसचीव
14. Secratary = सचीव
15. Stenographer = आशुलिपिक
16. Through proper channel = उचित माध्यम

⇒ मानविकि संबंधित पारिभाषिक शब्द

1. Adult franchise = वयस्क मताधिकार
2. Ballet paper = मत पत्र
3. Cabinet = मंत्री मंडल
4. Citizenship = नागरिकता
5. Concurrent list = समवर्ती सूची
6. Constitution = संविधान
7. Cultural heritage = सांस्कृतिक विरासत
8. Defamation = मानहानि
9. Empolyer = नियोक्ता
10. Frustration = कुंठा, हताशा
11. Human rights = मानव अधिकार
12. Prohibition = मद्य-निषेध

⇒ वाणिज्य संबंधि पारिभाषिक शब्द

1. Accountant = लेखापाल
2. Agent = अभिकर्ता
3. Bear transaction = मंदड़िया सौदा
4. Capital = पूंजी
5. Cost account officer = लागत लेखा अधिकारी
6. Depriciation = मूल्य ह्रास
7. Hypothication = समर्थक बंधक

8. Incometax return = आयकर विवरणी
9. Net loss = शुद्ध हानी
10. विधिक शब्दावली
⇒
1. Adjurn = स्थगन
2. Advocate = अधिवक्ता, अभिवाशक
3. Afidwit = शपत पत्र
4. Cross examination = प्रति परिक्षा
5. Charge sheet = आरोप पत्र
6. District magistrate = जिला दंडाधिकारी

प्रश्न:- भारतिय समाज की संरचना पर संक्षिप्त निबंध लिखिए
जाती और जनजाती भारतिय समाज के प्रमुख संरचना है। भारत कि जन संख्या का बड़ा भाग जन जातियो का है। भारतिय संविधान मे उनकी उन्नती के लिए कुछ विशेष प्रावधान किए है। इसके लिए एक अनुसूची तैयार कि गई है जिसमे उन सभी जन जाती को शामिल किया गया है जिन्हे यह सुविधाएँ प्रदान कि जाती है। संवैधानिक रूप से इन्हे अनुसूचित जन-जाती कहा जाता है।

भारतिय समाज कि सरचना के आधार :-
भारतीय समाज कि सरचना के परमपरागत (वैचारिक) और संस्थागत आधार है यद्पी विदेशी संस्कृतियो के मिलने से इसके महत्व मे कुछ कमी आई है फिर भी उन्हे भारतिय समाज कि सरचना का आधार माना जाता है।

आधारो के प्रकार :-

1) वर्ण आधार = भारत कि मूलभूत वर्ण व्यवस्था मूलभूत व्यवस्था थी यह व्यवस्था गुण-कर्म मूलक थी। हिन्दू समाज के चार भाग किए गए थे :-
(i) ब्राहमण (ii) क्षत्रीय iii) वैश्य iv) शूद्र
(i) ब्राहमण :- ब्राहमण को आस्तिक, ज्ञानि, क्षमाशील, संयमी और अपरिग्रही, सदाचारि होना चाहिए। उसके कार्य है अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ, जप, तप आदि करना और करवाना इन गुणो का धारक ब्राहमण होगा।
(ii) क्षत्रिय :- वीरत्व, तेजस्विता, धैर्य, चतुराई, व्यवहार कुशलता, युद्ध कि निपुणता आदि गुणो का धारक क्षत्रिय होगा। क्षत्रिय का कार्य है यज्ञ कराना
(iii) वैश्य :- वणिक बुद्धि, कौशल, परिश्रम, उद्योग, आलस्य रहित, आदि गुणो वाला वैश्य होगा। इस वर्ग का कार्य है पशु पालन, व्यवसाय, कृषी व्यापार आदि।
(iv) शूद्र :- सेवा और श्रम शूद्र वर्ण का प्रमुख कार्य बताया गया है। इस प्रकार वर्ण व्यवस्था मूल कर्म मूलक है बाद मे इस व्यवस्था को जन्म मूलक बना दिया गया। वास्तव मे यह व्यवस्था समाज मे शक्ति संतुलन के लिए थी। शक्तियाँ मुख्य रूप से चार प्रकार कि होति है।
1. शास्त्र कि शक्ति
2. शस्त्र कि शक्ति
3. अर्थ कि शक्ति
4. श्रम कि शक्ति
यह चारो शक्तियाँ किसी एक के हाथ मे केंद्रित हो जाए तो इससे निरंकुशता पैदा होती है।

शक्ति के विकेंद्रिकरण के लिए वर्ण व्यवस्था विकसित कि गई।

आश्रम व्यवस्था

- ब्रहमचार्य आश्रम (0 – 25 आयु)
- ग्रहस्थ आश्रम (25 – 50 आयु)
- वानप्रस्थ आश्रम (50 – 75 आयु)
- सन्यास आश्रम (75 – 100 आयु)

पुरुषार्थ धर्म

- अर्थ → काम → मोक्ष

⇒ विधिक शब्दावली

7. Attorny journal = महान्याय वादी
8. Litigation = विवाद, मुकदमे बाजी
9. Ordinance = अध्यादेश

⇒ वैज्ञानिक एवं तकनीकि शब्द

1. Immunity = रोग प्रतिरोधक क्षमता
2. Air pollution = वायु प्रदुषण
3. Aeronautics = अंतरिक्ष विज्ञान
4. Antibiotics = प्रति जैविक
5. Biotechnology = जैव प्रोद्यौगिकि
6. Biomedical engeneering = जैव चिकित्सकिय यांत्रिकि
7. Differential calculas = अवकलन गणित
8. Ecology = परिस्थितिकी
9. frequency = आवर्त्ती
10. food preservation = खाद्य संरक्षण
11. fossil fuel = जीवाश्म इन्धन
12. Radiation = विकिरण
13. Sattellite = उपग्रह
14. Synthesis = ~~संस~~ संश्लेषण

इकाई -5

अनुवाद, सिद्धान्त और व्यवहार

अनुवाद संस्कृत का तत्सम शब्द है वद का अर्थ है बोलना या कहना इसमे अनु उपसर्ग जुडने से अनुवाद शब्द बनता है। अनुवाद का आशय है पहले कहे गए कथन या अर्थ ग्रहण करने के बाद पुनः कहना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद शब्द अंग्रेजी के ट्रांसलेशन का हिन्दी रूपांतरण है। इसी के समान्तर एक शब्द ट्रांसक्रिप्शन है जिसे हिन्दी मे लिप्यंतरण कहते है।

डॉ कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार एक भाषा मे व्यक्त भाव या विचारो को दूसरी भाषा के समान और सहज रूप मे व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद कहलाता है।

डॉ जयन्ति प्रसाद नौटियाल के अनुसार स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा मे किसी विषय, वस्तु या संदेश कि समतुल्य अभिव्यक्ति अनुवाद है।

नाईडा के अनुसार अनुवाद का संबन्ध स्रोत भाषा के संदेश का पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा के निकट स्वाभाविक उपादान प्रस्तुत करने से होता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न
1) हिन्दी भाषा का परिचय
2) हिन्दी भाषा कि विशेषताए
3) मानक हिन्दी भाषा
4) अशुद्धि संशोधन 5) पारिभाषिक शब्दावली

⇒ अनुवाद के क्षेत्र :-
आज कि दुनियाँ का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है सारी दुनियाँ को एक करने मे मनुष्य समाज को एक दुसरे के नजदीक लाने मे और मनुष्य जीवन को सुखी बनाने मे अनुवाद कि महत्वपूर्ण भूमिका है। मनुष्य को विभाजित करने मे भाषा कि भूमिका भी है परन्तु अनुवाद मे इस संकट को हल करने मे योगदान दिया है भारतीय साहित्य और विश्व साहित्य का क्षेत्र बहुत विशाल है। अनुवाद के मुख्य रूप से दो क्षेत्र है।
1) साहित्यिक क्षेत्र 2) साहित्येतर क्षेत्र

1) भारतीय तथा विश्व साहित्य क्षेत्र = भारत मे २२ भाषाएँ राज भाषा के रूप मे संविधान मे मान्य है इन सभी भाषाओ मे उच्च कोटी का साहित्य है जिनका अनुवाद करना आवश्यक है। विश्व मे अनेक समृद्ध भाषाएँ है जिनका साहित्य भी उच्च कोटी का है अतः अनुवाद का क्षेत्र विश्व भाषा के साहित्य तक जाता है।

2) ज्ञानात्मक साहित्यिक क्षेत्र :- इसके अंतरगत ईतिहास भुगोल, अर्थशास्त्र, समाजनीती शास्त्र दर्शन नीती शास्त्र जैसे विषयों के साहित्य का अनुवाद शामिल है।
वैज्ञानिक साहित्य के अंतरगत गणित, भौतिकि, रसायन आदि विषयो के साहित्यों का अनुवाद आता है।

3) भाव प्रधान क्षेत्र :- इसमे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि आते है यह अनुवाद का बहुत बडा क्षेत्र है।

4) शिक्षा क्षेत्र :-
5) उद्योग एवं व्यापार क्षेत्र
6) पर्यटन क्षेत्र 7) प्रशासन क्षेत्र
8) कार्यालयीन क्षेत्र 9) संसदिक क्षेत्र
10) न्यायालयीन क्षेत्र 11) संचार माध्यम क्षेत्र
12) धार्मिक और दार्शनिक क्षेत्र
13) सांसकृतिक एवं कलागत क्षेत्र
14) अंतराष्ट्रिय क्षेत्र

वर्तमान काल मे भारतीय संस्कृति से लुप्त हो चुकी है। भौतिकवादी दर्शन और व्यक्तिवादी विचार धारा ने आश्रम व्यवस्था को हानी पहुचाई है। प्राचीन त्याग कि परंपरा को अब कोई अपनाना नहि चाहता, गुरुकुलो का स्थान आधुनिक शिक्षण संस्थाओ ने ले लिया है यहा ना तो समर्पित शिक्षक ~~उपलब्ध~~ उपलब्ध है और ना विद्यार्थी अब ज्ञान वृद्धि कि जगह शिक्षा आजिविका का साधन मानी जाती है।
ग्रहस्त आश्रम कि व्यवस्था आज भी व्यक्ति के जीवन मे आती है लेकिन प्राचीन काल का आदर्श ग्रहस्त

नहीं दिखाई नहीं देता। विवाह को धार्मिक संस्कार मानना कम हो गया है। समझौते कि व्यवस्था को अपना लिया गया है।

गृहस्त आश्रम मे रहकर जिन पाँच ऋणों से मुक्ति के लिए कार्य किए जाते थे वे अब भूतकाल कि बाते हो गई है।

वर्तमान अवकाश प्राप्ति कि अवस्था कि तुलना वानप्रस्थ आश्रम से कि जा सकति है परन्तु वर्तमान मे व्यक्ति का व्यवहार प्राचीन काल जैसा नहीं है इसी प्रकार प्राचीन समय कि सन्यास आश्रम कि बात भी वर्तमान मे कलपना हि लगती है।

स्पष्ट है कि वर्तमान मे आश्रम व्यवस्था प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के रूप मे अध्ययन कि वस्तु रह गई है लेकिन इससे इसका महत्व कम नहीं होता। यदी हम इस आश्रम व्यवस्था को अपना लेते है तो वर्तमान कि अनेक समस्याओ का निराकरण किया जा सकता है।

⇒ ऋण के प्रकार :-

1) देव ऋण 2) पितृ ऋण 3) गुरू ऋण
4) आतिथि ऋण 5) भूत ऋण

पुरूषार्थ की अवधारणा भारतीय समाज की संरचना

1) धर्म 2) अर्थ 3) काम 4) मोक्ष

अपने कार्य के सम्पादन अथवा लक्ष्य कि प्राप्ति के लिए किया गया कर्म पुरूषार्थ कहलाता है।

पुरूषार्थ का तात्पर्य है उद्द्योग और परिश्रम। किसी लक्ष्य कि प्राप्ती के लिए किया गया व्यक्तिगत प्रयत्न पुरूषार्थ है। भारतीय संस्कृति मे चार पुरूषार्थ माने गए है

1) धर्म = भारतीय समाज संरचन मे धर्म का बहुत महत्व है। धर्म का उद्देश्य विश्व का कल्याण है धर्म रक्षा करता है और संरक्षण प्रदान करता है। धर्म शब्द का अर्थ है धारण करना। धर्म व्यक्तियों को अच्छे कार्यो के लिए प्रेरित करता वह मनुष्य को नैतिक कर्तव्यो का पालन करने कि प्रेरणा देता है। भारतीय जीवन दर्शन के अनुसार धर्म मोक्ष कि प्राप्ती का अंतिम साधन है।

2) अर्थ = यह दूसरा पुरूषार्थ है। मानव जीवन मे भौतिक सुख समदृधी का भी उतना हि महत्व है जितना आध्यात्मिकता का। गृहस्त आश्रम के लिए अर्थ को सहायक माना गया है। यह कर्तव्यो कि पूर्ती मे मदद करता है। गृहस्ती चलाने और धार्मिक कार्य करने के लिए धन जरूरी है धन प्राप्त करने के लिए किया गया उद्द्योग अर्थ पुरूषार्थ कहलाता है।

3) काम = काम का तात्पर्य यौन इच्छाओ कि वैद पूर्ती से है। दूसरे अर्थ मे काम के अंतर्गत वे सारी इच्छाए शामिल है जो मानविय जीवन कि संतुष्टी के लिए आवश्यक है। काम के असंतुष्टी व्यक्ति मे मनोविकार को जन्म देती है। काम कि पूर्ती के लिए मनुष्य वैवाहिक जीवन मे प्रवेश करता है जिसके

फल स्वरूप परिवार नाम कि संस्था का विकास होता है। सामाजिक दृष्टि से काम पुरूषार्थ बहुत महत्व पूर्ण है।

4) मोक्ष = मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। इसका अर्थ है आत्मा का परमात्मा मे लीन हो जाना। जन्म मरण के चक्र से मुक्ति पा जाना। मोक्ष प्राप्त करने के लिए मनुष्य को कठोर परिश्रम करना होता है। मोक्ष का संबन्ध परलोक से है यह सद्गति का प्रतीक है।

पुरूषार्थ व्यक्ति एवं समाज दोनो पर नियंत्रण करने के साथ साथ दोनो के संबंधो को संचालित करता है इसलिए पुरूषार्थ ~~और~~ को आश्रम व्यवस्था का नैतिक आधार कहा जाता है।

02/05/2022

ईकाई = 3

सार लेखन किसे कहते है? अच्छे सार लेखन कि विशेषता बताइए।

संक्षेपण (सार) शब्द अंग्रेजी के Summary का हिन्दी अनुवाद है। बोलचाल की भाषा मे Summary भी कहते है। हिन्दी मे संक्षिप्त लेखन सार लेखन अथवा संक्षेपण कहते है। संक्षेपण अपने आप मे एक कला है। इसका उपयोग व्यापारिक और सरकारी सभी प्रकार के विभागो मे किया जाता है। अधिक शब्दो मे कही गई बात को कम से कम शब्दो मे कहने अथवा लिखने के कौशल को सार लेखन कहते है। किसी दिये गए अवतरण, अनुच्छेद मे से अप्रासंगिक और अनावश्यक बातो का त्याग और सभी आवश्यक और प्रासंगिक बातो के समावेश को संक्षेप कहते है।

⇒ विशेषताएँ :-

1) शुद्धता = यह सार लेखन के लिए आवश्यक गुण है। सारांश मे वही बात लिखना चाहिए जो मूल संदर्भ मे हो।

2) संक्षिप्तता = अनावश्यक बातो के लिए संक्षेपण मे कोई स्थान नही है। मूल अनुच्छेद के सभी विचारो को कम से कम शब्दो मे रखने का प्रयास किया जाता है। यह मूल अवतरण का एक तिहाई होना चाहिए।

3) स्पष्टता = सार लेखन की प्रकिया मे शब्दो का चयन और वाक्य रचना को स्पष्टता के साथ व्यक्त करना चाहिए। दो अर्थ देने वाले शब्दो का प्रयोग नही करना चाहिए।

4) पूर्णता = संक्षेपण का यह अर्थ नही है कि कुछ बाते छुट जाए और कुछ बाते जुड जाए। प्रस्तुत विषय सामग्री का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करना चाहिए।

5) प्रवाह और क्रमबद्धता = संक्षेपण मे भाषा का प्रवाह होना चाहिए। भाव की क्रमबद्धता संक्षेपण को प्रभावशाली बनाती है।

6) मौलिक - रचना = संक्षेपण मे मौलिकता का ध्यान रखना चाहिए। अनेक शब्दो के स्थान पर एक शब्द का उपयोग करना चाहिए।

⇒ सार लेखन कि विधि :-

1. मुल पाठ को कम से कम तीन बार ध्यान से पढ़ना चाहिए। जिससे की महत्वपूर्ण तथ्यों को छाँटा जा सके।
2. सभी महत्वपूर्ण तथ्यों को रेखांकित कर लेना चाहिए
3. रेखांकित शब्द और वाक्यखण्डों के आधार से रूपरेखा बना लेनी चाहिए
4. इस रूप रेखा को व्याकरण के नियमों के अनुसार लिख लेना चाहिए।
5. सार लेखन हमेशा अन्य पुरुष मे लिखना चाहिए।
6. अंत मे सार लेखन का उपयुक्त शीर्षक देना चाहिए

पल्लवन किसे कहते है ? पल्लवन की विशेषताएँ बताइएँ।

उत्तर पल्लवन शब्द से अभिप्राय है कि विस्तार करना। यह शब्द संक्षेपण का विरोधी है। किसी दिए गए वाक्यखण्ड का गंभीर विचार से विस्तार करने को पल्लवन कहते है। कुछ वाक्य अथवा विचार ऐसे होते है जिनको अर्थ को समझने के लिए व्याख्या की आवश्यक्ता होती है। इसे उदाहरण देते हुए स्पष्ट करना चाहिए

पल्लवन के नियम निम्नानुसार है :-

1. मुल अवतरण को ध्यान से पढ़कर उसको केन्द्रीय भाव ग्रहण करना चाहिए।
2. प्रत्येक भाव को क्रमबद्ध रूप मे लिख लेना चाहिए।
3. पल्लवन की भाषा सरल और सुबोध होना चाहिए।
4. भाव की स्पष्टता के लिए उदाहरण देना चाहिए
5. भाव पल्लवन करते समय अपना मत देना आवश्य है

⇒ विशेषताएँ :-

1. कल्पनाशीलता 2. मौलिकता
3. विश्वसनीयता और रोचिकता
4. उन्मुक्त शैली 5. प्रवाह महता

⇒ विषय :-

1. परिवर्तन ही जीवन है 2. आत्मविश्वास सफलता कि कुंजी है
3. परिश्रम अध्ययन का जीव है।
4. काल करे सो आज कर

⇒ भारत देश के और उसके निवासी 04/05/2022

1 सभ्यता [शरीर] 2. संस्कृती [आत्मा]
1 भौतिक

प्रश्न। वैदिक प्रार्थनाए क्या है समझाइए।

प्रश्न। मानव विज्ञान कि कसौटि पर भारतीय समाज कि व्याख्या किजिए।

09/05/2022

प्रश्न। सामाजिक गतिशीलता से क्या आशय है।

प्रश्न। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक हुए सामाजिक परिवर्तनो कि जानकारी दिजिए।

11/05/2022

ईकाई = 4
समाचार लेखन

प्रश्न) समाचार लेखन का अर्थ स्पष्ट करते हुए अच्छे समाचार लेखन कि विशेषताएँ बताइए।

समाचार शब्द सम + आचार शब्द से बना है। शब्दार्थ कि दृष्टि से समाचार का आशय है सम्यक आचार किंतु आजकल इसका प्रयोग खबर, संवाद, हाल, संदेश, पूछना आदि के लिए किया जाता है। अंग्रेजी के रिपोर्टिंग शब्द का ~~स्माथ~~ पर्याय शब्द है।

किसी घटना अथवा कार्य का विवरण जो किसी को सुचित करने के लिए हो उसे समाचार कहते है। समाचार जल्दि मे लिखा गया इतिहास है समाचार लेखन कि कला विशेष होति है। समाचार लेखन मे क्या, कब, क्यो, कहा, कैसे और कौन शब्दो का अत्यधिक महत्व होता है।

⇒ अच्छे समाचार लेखन कि विशेषताएँ

1. समाचार का शीर्षक पाठको मे जिज्ञासा उत्पन्न करने वाला होना चाहिए।
2. समाचार सदैव प्रामाणिक होना चाहिए।
3. समाचार लेखन मे निष्पक्षता रहनी चाहिए।
4. समाचार लेखन मे स्वस्थ दृष्टिकोण होना चाहिए।
5. किसी व्यक्ति का नाम देते समय सावधानि रखनी चाहिए।
6. समाचार लेखन मे जीवन के सभी क्षेत्रो को ध्यान मे रखना चाहिए।
7. सम्पादकिय लेख हमेशा ज्वलन्त समस्याओ से संबंधित होना चाहिए।
8. समाचार कि भाषा सीधि सरल और स्वाभाविक होना चाहिए

समाचारो का चयन

1. अत्यधिक जन रूची
2. तथ्यो कि पवित्रता
3. लोकाकर्षण

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन लेखन कि कला पर प्रकाश डालिए।

⇒ विज्ञापन = विज्ञापन का अर्थ है समझना, सूचना देना, निवेदन या प्रार्थना करना। रोजर रिव्ज़ के अनुसार विज्ञापन एक व्यक्ति के मस्तिष्क से दुसरे मस्तिष्क मे एक विचार को स्थानानतरित करने कि कला है।

आज किसी वस्तु, सेवा, या विचार को आगे बढ़ाने के लिए विज्ञापन का उपयोग किया जाता है। मनुष्यो से लेकर पत्रिकाओ तक, सडक से लेकर घर तक संचार के तमाम साधनो मे विज्ञापन - ही - विज्ञापन नज़र आता है।

विज्ञापन उन सभी गतिविधियो का नाम है जिनका उद्देश्य किसी विचार वस्तु या सेवा के विषय मे जानकारि प्रसारित करना हो।

⇒ विज्ञापन के माध्यम :-

1. प्रकाशन माध्यम
2. प्रसारण माध्यम

3. डॉक विज्ञापन

टेलिविशन पर प्रसारित होने वाले विज्ञापन दो प्रकार के होते है।

1. स्पॉट विज्ञापन
2. प्रायोजित कार्यक्रम

विज्ञापनों के प्रसारण के अनेक माध्यम होते है इनमे से मुख्य प्रकार निम्नलिखित है।

1. फिल्म और विडियो।
2. इंटरनेट
3. वॉल पेंटिंग
4 विद्युत डिसप्ले और नियोन साइन
5. कियोस्क
6. सचल विज्ञापन
7. पोस्टर और होरडिंग
8. बैनर

⇒ विज्ञापन के प्रकार

1. वर्गिकृत विज्ञापन
2. सजावटि विज्ञापन
3. उपभोगता विज्ञापन
4. औद्योगिक विज्ञापन
5 समाचार सूचना विज्ञापन = इन विज्ञापनो को एडवरटोरियल विज्ञापन भी कहा जाता है। इसका प्रकाशन समाचारों कि तरह हि समाचारों के बीच मे होता है इसके अंत मे संक्षिप्त मे "AD." लिख दिया जाता है। वास्तव मे यह एक प्रकार का विज्ञापन है
6. राजकिय और शिक्षा प्रद विज्ञापन
7. वित्तीय विज्ञापन
8. व्यावारिक विज्ञापन
9. कृषि संबंधि विज्ञापन
10. स्थानिय विज्ञापन
11. अंतर्राष्ट्रिय विज्ञापन
12. राष्ट्रिय विज्ञापन
13. क्षेत्रिय विज्ञापन

धर्म और दर्शन

प्रश्न 1) औपनिषदिक चिन्तन से आप क्या समझते है? (Pg No. 147)
प्रश्न 2) योग दर्शन को विस्तार से समझाइये।
प्रश्न 3) जैन अथवा बौद्ध परम्परा क्या है

ज्ञापन कि रचना उत्तम पुरुष मे कि जाती है। इसमे न तो कोई संबोधन होता है और न पत्र के अंत मे स्व निर्देश होता है केवल प्रेषक के हस्ताक्षर और पदनाम लिखा जाता है।

जिस मंत्रालय के नाम कार्यालय ज्ञापन भेजा जाता है उसका नाम नीचे पृष्ठ के बाई और लिखा जाता है। इसकी कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित है:-

1) इसमे कोई संबोधन नहीं होता।
2) प्रारंभ मे कार्यालय का पता, स्थान, दिनांक, पत्र संख्या लिखि जाती है।
3) प्रारंभ मे हि ऊपर कार्यालय-ज्ञापन लिख दिया

जाता है।
ज्ञापन के अंत मे जिस मंत्रालय को यह भेजा जाता है उसका नाम और पता भी लिखा जाता है।
ऐसा माना गया है कि ज्ञापन का प्रयोग अधिनस्थ नहीं करना चाहिए।

कार्यालय आदेश

कार्यालय आदेश वे पत्र है जो किसी भी मंत्रालय के कर्मचारियों को उनसे जुड़ी हुई सूचनाएँ देने के लिए लिखे जाते है। कार्यालय आदेश मे इस प्रकार कि सूचना भी हो सकती है जिसका संबन्ध एक अथवा अनेक कर्मचारियों से हो नियुक्तियाँ, अवकाश कि स्विकृति और पदवृद्धि आदि कि सूचना कार्यालय आदेश द्वारा दि जाती है इसी प्रकार कार्यालय के विषय मे बनाए गए किसी सामान्य नियम कि सूचना भी कार्यालय आदेश द्वारा दि जाती है। इसकी रचना सीधी और सरल होती है ऊपर संख्या और कार्यालय का नाम तथा दिनांक देकर आदेश लिख दिया जाता है। वाक्यो कि रचना मे उत्तम पुरुष का प्रयोग नही किया जाता है नीचे बाई ओर आदेश देने वाले अधिकारी के हस्ताक्षर और पद का उल्लेख किया जाता है। स्वनिर्देश के लिए कोई स्थान नही रहता अंत मे जिन्हे प्रतिलीपी भेजी जा रही है उनके नाम का उल्लेख होता है।

अधिसूचना

अधिसूचना को अंग्रेजी मे नोटिफिकेशन कहते है। पत्राचार के इस रूप का प्रयोग भारतिय गजट मे किया जाता है। अधिसूचना मे आदेशो के लागू होने का अधिकार प्रदान करने नियुक्तियाँ करने और राजपत्रित अधिकारियो कि छुट्टी और स्थानांतरण और आदि कि सूचनाए देने के लिया किया जाता है। शासन कि ओर से जनसाधरण के सूचनार्थ या सरकारि कार्यालयो अधिकारियो कर्मचारियो कि जानकारि के लिए केंद्रिय अथवा प्रदेशित सरकारो द्वारा जो घोशणाएँ राजपत्रित प्रकाशनो से प्रकासित होति है उन्हे अधिसूचना कहते है।

अधिसूचनाएँ सरकारी अधिकारियो कर्मचारियो कि नियुक्ति पदोन्नती, स्थानांतरण, वेतन वृद्धि अवकाश, त्याग पत्र, सेवानिवृत्ती, तथा अधिकारियो के अधिकारो आदि कि सूचना देने के लिए निकाली जाती है। अधिसूचना भेजते समय यह स्पष्ट उल्लेख किया जाता है कि उसे गजट के किस भाग के किस खण्ड मे कब प्रसारित किया जाना है। अधिसूचना किसी अधिकारि या व्यक्ति विशेष को संबोधित करके नहि लिखि जाती है। यह अन्य पुरूष मे लिखि जाति है।

23/05/2022

भारतीय संस्कृति का विश्व पर प्रभाव

भारतिय सस्कृति कि विशेषताए

1. प्राचीनता

2. स्थायित्व

3. सहिष्णुता (सहनशीलता)
4. बहुकोणीय व्यवस्था
5. लचीलापन
6. कर्म एवं पुनर्जन्म का सिद्धांत
7. ऋण व्यवस्था :- देव ऋण पितृ ऋण, गुरु ऋण, अतिथि ऋण भूत ऋण
8. संयुक्त परिवार
9. अनेकता मे एकता

1. साहित्य = पंचतंत्र, अरेबियन नाइट्स, रहस्यानुभूति, शंकराचार्य (अद्वैत), शुकसप्तशती
2. ज्योतिष = आर्यभट्ट (ग्रहण)
3. गणित = शून्य, दशमलव, बीजगणित
4. चिकित्साशास्त्र = चरक, सुश्रुत, भावमिश्र, शल्यचिकित्सा
5. दर्शन = प्लेटो का ग्रंथ रिपब्लिक (पुनर्जन्म का सिद्धांत यूनान का दर्शन से मोक्ष का सिद्धांत मिलता है)

मध्यप्रदेश का सांस्कृतिक वैभव

1) नृत्य :- संगीत
2) चित्रकला
3) मूर्तिकला
4) लोक गीत :- पंडवानी, चंदैनी तेजाजी की कथा, ढोला मारु की कथा, आल्हा
5) लोक नृत्य :- गौर
6) लोक नाट्य
7) लोक चित्र
8) बाँस शिल्प
9) धातु कला
10) मिट्टी शिल्प

प्रश्न) मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक वैभव पर ~~[illegible]~~ आलेख संक्षिप्त निबंध लिखिए।